ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/324168168

□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□

Research · January 2017

CITATIONS
0

1 author:

Bhagawati Paraksh Sharma
Pacific University India

268 PUBLICATIONS **0** CITATIONS

SEE PROFILE

All content following this page was uploaded by Bhagawati Paraksh Sharma on 03 April 2018.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

हमारे प्राचीन इतिहास का नवीन अनुसंधानों से सुसंगत होना आवश्यक

भगवती प्रकाश

आज क नवीन ऐतिहासिक अनुसंधानों व पुरातात्विक अन्वेषणों से हमारे प्राचीन वैभव पूर्ण इतिहास व उसके काल–क्रम की प्राचीनता के सम्बन्ध में अनेक नयी जानकारियाँ सामने आ रहीं है। लेकिन, देश के लिखित इतिहास में इनका समावेश नहीं हो पाने से हमारे वास्तविक इतिहास के ये नवीन, प्रामाणिक व वैज्ञानिक तथ्य अनछुए रह जाते हैं। ख्यातनाम आर्थिक इतिहास लेखक, एंगस मेडिसन द्वारा बीसवीं सदी के अन्त में विश्व के आर्थिक इतिहास पर किये अनुसन्धानों से अनभिज्ञता के कारण ही देश के पूर्व वित्तमंत्री एवं ख्यातनाम अर्थशास्त्री माने जाने वाले पी. चिदम्बरम तक ने 2007 में अपनी पुस्तक 'एन आउटसाइड व्यू : व्हाई गुड इकॉनोमिक्स वर्क फॉर एवरीवन' के उद्घाटन के अवसर पर लखनऊ में आयोजित संगोष्ठी में यहाँ तक कह दिया था कि ''भारत कभी भी धनी देश नहीं रहा है। देश में गरीबी सदा थी और आज भी है और भारत में घी–दूध की नदियों और इसके सोने की चिड़िया होने के मिथक पर आधारित पुस्तकों को जला देने की आवश्यकता है''। उनका यह कथन आज के आधुनिक वैज्ञानिक अन्वेषणों से अनभिज्ञता का ही परिणाम था। विश्व के सर्वाधिक ख्यातनाम ब्रिटिश आर्थिक इतिहास लेखक एंगस मेडिसन द्वारा औद्योगिक देशों के संगठन ओ.ई.सी.डी. के निर्देश पर, सुदीर्घ, श्रम–साध्य शोधों के बाद लिखी उनकी पुस्तक ''विश्व का आर्थिक इतिहास एक सहस्त्राब्दी गत दृष्टिपात'' की अनदेखी क कारण ही वे इस गलत निष्कर्ष पर पहुंच गये थे। बेल्जियम की राजधानी ब्रुसेल्स स्थित औद्योगिक देशों के उक्त संगठन ''आर्गेनाइजेशन फॉर इकानामिक कोआपरेशन एण्ड डवलपमेण्ट'' जिसके अमेरिका, जापान व यूरोप के देश सदस्य है, के मुख्यालय से यह पुस्तक 2001 में प्रकाशित हुयी है। इस पुस्तक में एंगस मेडिसन ने भारत अपने तथ्य पूर्ण शोधों के आधार पर को ईस्वी वर्ष 1 से 1500 तक विश्व का सबसे धनी देश सिद्ध किया है। ब्रिटिश आर्थिक इतिहास लेखक **एंगस मेडिसन की इस पुस्तक ''वर्ल्ड इकॉनोमिक हिस्ट्री ए मिलेनियम पर्सपेक्टिव'' के अनुसार ईस्वी 1 से 1500 तक विश्व के सकल उत्पादन में भारत का योगदान 33 प्रतिशत था** जो आज भिन्न–भिन्न आधारों पर गणना कर लेने पर भी मात्र 3 से 6.5 प्रतिशत तक आता है। मुगल अत्याचारों के लम्बे दौर के बाद 1700 ईस्वी तक भी विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में भारत का अंश उन्होंने 22 प्रतिशत बतलाया है। लेकिन आज सोलह वर्ष बाद भी हमारी इतिहास की पुस्तकों व अधिकांश अर्थशास्त्र की पुस्तकों में इसका उल्लेख नहीं है।

विगत 30 वर्षों में तमिलनाडु के कोडूमनाल गांव के पुरातात्विक उत्खननों में मिले 2500 वर्ष प्राचीन औद्योगिक नगर के अवशेषों में अत्यन्त उन्नत वस्त्रोद्योग, रत्न प्रविधेयन और विविध प्रकार के उत्कृष्ट इस्पात उत्पादन के प्रचुर प्रमाण मिले है। वहाँ पर 1500 वर्ष प्राचीन थाइलैण्ड मिस्र व रोम के सिक्के

निकले हैं। इससे उस काल में हमारा दक्षिण पूर्ण एशिया, अरब व यूरोप तक व्यापार के प्रमाण मिलते हैं। आज की चमकदार अर्थात विट्रीफाईड टाईलों जैसे, विट्रीफाईड क्रूसिबल्स मिलने से यह भी सिद्ध होता है कि, आधुनिक विट्रीफिकेशन की प्रक्रिया का आविष्कार यूरोप में पिछली शताब्दी में न होकर 3 हजार वर्ष पूर्व भारत में ही हो चुका था और हम 2500 वर्ष पूर्व आज जैसा उत्कृष्ट स्पात या स्टील बनाने में सक्षम थे। कोडूमनाल में मिले अनेक उत्तर भारत के नामपट्टों व अभिलेखों से लगता है कि 2500 वर्ष पूर्व देश में आर्य और द्रविड़ जैसा कोई विभाजन एवं उनमें किसी प्रकार के वैमनस्य नहीं था और इससे आर्यों का बाहर से आगमन व द्रविडों पर आक्रमण की कल्पना भी निराधार हो जाती है। कोडूमनाल के उत्खननों में पद्मासन की अवस्था में बैठे नर कंकाल भी मिले हैं, जो वहाँ 2500 वर्ष पूर्व योग की परम्परा का प्रमाण देते हैं। हाल में किये वंशाणु साम्य अर्थात जीन पूल के अध्ययनों में उत्तर व दक्षिण भारत के लोगों म नस्ल भिन्नता के भी कोई प्रमाण सामने नहीं आते हैं। आर्यों के भारत के बाहर से आने व द्रविड़ों पर आक्रमण और उनके बीच परस्पर अलगाव का मिथक कोडूमनाम में उत्तर व दक्षिण भारत में पारस्परिक लेन–देन के प्रमाणों से भी निर्मूल हो जाता है।

वस्तुतः सिन्धु घाटी सभ्यता का आर्यों का भारत में आगमन पर नष्ट किये जाने के जो प्राचीन विवेचन है। वे भी नवीन खोजों के बाद निर्मूल हो गये है। उपग्रह के चित्रों व नये पुरातात्विक उत्खननों से निविवाद रूप से यह सिद्ध हो गया है कि वह सम्यता अनवरत बाढ़ के कारण हुये जल प्लावन के कारण समाप्त हुई है। वहाँ पर जो मिट्टी की अनेक परतें जमा हुई है, वह वातावरण में परिवर्तन व जल प्लावन का परिणाम है। वहाँ के भूगर्भिक अनुसंधान यह भी बतलाते है कि 4200 से 4000 वर्ष पूर्व मानसून की बरसात का विलोपन भी जन विस्थापन का कारण बताया जा रहा है। सभी ताजा अनुसंधानों से यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गया है कि वहाँ से कोई आक्रमण जनित विस्थापन नहीं हुआ, जैसा आर्यों के बाहर से आगमन की बात करने वाले इतिहासकार कहते आये है। विश्व के अति प्राचीन विश्वविद्यालयों में गिने जाने वाले 1575 में स्थापित लीडेन विश्वविद्यालय में तमिल के चोलराज राजेन्द्र की राज्याज्ञा की एक हजार वर्ष प्राचीन 30 किलो वजन के जो ताम्रपत्र हैं, वे संस्कृत में विष्णु स्तुति से प्रारम्भ होते है और उसमें बाद के वर्णन तमिल भाषा में हैं। इससे यह मिथक भी ध्वस्त हो जाता है कि तमिलनाडू में पर्व में संस्कृत व विष्णु पूजा का चलन नही था। लीडेन विश्वविद्यालय ने 2014 में चोलराज के राज्यारोहण की सस्त्राब्दी में इनका प्रदर्शन किया था। स्मरण रहे चोलराज राजेन्द्र ने एक हजार वर्ष पूर्व अपने राज्य का विस्तार बंगाल में गंगा तट से सम्पूर्ण श्रीलंका व म्याँमार सहित सम्पूर्ण दक्षिण पूर्व एशिया तक किया था। लेकिन, इस सभी नवीन अनुसन्धानों का इतिहास की पुस्तकों में समावेश न होना चिन्ताजनक है।

इसी प्रकार भारत के बाहर इण्डोनेशिया व कम्बोडिया से लेकर अफगानिस्तान तक विद्यमान प्राचीन हिन्दु सनातन व बौद्ध मंदिर, इण्डोनेशिया से अफगानिस्तान पर्यन्त हिन्दु संस्कृति व जीवन पद्धति के सघन विस्तार का प्रमाण देते हैं। कम्बोडिया स्थित अंकोरवाट का विष्णु मंदिर विश्व का सबसे बड़ा हिन्दु मंदिर ही नहीं वरन विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक है। दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर से यह चार गुना बड़ा है। पूरे 400 वग किमी में फैला यह देवस्थानों के इस संकुल में रामायण व महाभारत की हजारों दृश्य शिलाओं पर उत्कीर्ण हैं। इण्डोनेशिया का प्रबनन (परब्रह्म का अपभ्रंश) मंदिर, म्याँमार (बर्मा) का आनन्द मंदिर, जावा का बोरोबुदुर, कम्बोडिया का बयोन मंदिर जैसे अनगिनत मंदिर सम्पूर्ण दक्षिण एशिया में फैले हैं। आज तो यूरोप में भी सूर्य अर्थात मित्र या मिथ्र देवता की उपासना के प्रचुर प्रमाण सामने आ रहे हैं।

यूरोप के पुरातात्विक उत्खननों में मिल रहे सूर्य देवता के उपासना के प्रमाण और भी आश्चर्यजनक है। यूरोपीय पुरातत्वविदों एडम्स फिथीयन की पुस्तक ''मित्राइज्म इन यूरोप'' और प्रकाशान विभाग, भारत सरकार, नयी दिल्ली से प्रकाशित विशम्भरनाथ पाण्डे की पुस्तक ''भारत व मानव संस्कृति'' के अग्रलिखित उद्धरण इस सम्बन्ध में पठनीय है : प्राचीन यूरोप में सूर्य पूजा के सम्बन्ध में एडम्स व फीथियन ने लिखा है कि "आज के दिन यूरोप में शायद ही कोई भी संग्रहालय ऐसा नहीं है जिसमें इस ईरानी देवता (मित्र) का कोई न कोई चिन्ह, धातु या पत्थर में उभरा हुआ या खुदा हुआ; कोई न कोई लेख या चित्र या कोई न कोई देखने योग्य यादगार मौजूद न हो।" (मित्राईज्म–लेखक डब्लू.जे. फिथिएन व एडम्स एम.ए. पृष्ठ –4 से विशम्भरनाथ पाण्डे द्वारा लिखित व प्रकाशन विभाग, भारत सरकार से प्रकाशित पुस्तक ''भारत और मानव संस्कृति'' में उद्धृत)। इटली आदि कुछ यूरोपीय देशों में पाये गये विशाल शिवलिंगों आदि से भी यह सहज निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यूरोप में भी हिन्दू धर्म – स्थान रहे हैं। अपनी इसी पूर्वोक्त पुस्तक में एडम्स व फीथियन ने लिखा है कि : "हजरत ईसा के जन्म से चार सौ वर्ष पहले से लेकर उनकी मृत्यु के लगभग चार–पाँच सौ वर्ष बाद तक एक–एक कर पश्चिमी एशिया, मिस्र और अफ्रीका के दूसरे उत्तरीय देशों के अलावा यूनान, बलकान, इटली, पोलैंड, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, आस्ट्रिया, हंगरी, स्विटजरलैंड, स्पेन और इंगलिस्तान अर्थात् समस्त यूरोप में – जहाँ–जहाँ थोड़े बहुत आदमी भी सभ्य या अर्ध–सभ्य कहला सकते थे, मित्र के असंख्य मन्दिर थे और मित्र ही की पूजा होती थी। इंगलिस्तान के नार्थमब्रलैंड, राचस्टर, कैम्बकफोर्ट, आक्सफोर्ड, यार्क, मैनचेस्टर और लंदन में मित्र के मन्दिर और उसकी मूर्तियां भरी हुई थीं। रोम और शेष इटली मित्र के उपासकों से ठसाठस थे।" (मित्राईज्म–लेखक डब्लू.जे. फिथिएन, एडम्स एम.ए. पृष्ठ –34 से बिशम्भरनाथ पाण्डे की पुस्तक 'भारत और मानव संस्कृति' में पुर्नउद्धत। इसी पुस्तक में यह भी लिखा है कि "किन्तु अचानक जूलियन की हत्या के थोड़े दिनों के अन्दर ही मित्री धमसिर्फ रोमन

साम्राज्य से ही नहीं बल्कि सारे यूरोप में लोप होना शुरू हो गया। फिर भी पांचवी सदी तक इस सम्प्रदाय के लाखों अनुयायी स्विट्जरलैंड, हंगरी और जर्मनी के दक्षिण में पाये जाते हैं उनकी टूटी हुई मुर्तियां, आलेख और टूटे हुए मंदिरों के पत्थर अभी तक अजायबघरों में देखने को मिलते हैं। विशम्भर नाथ पाण्डे लिखते हैं कि धीरे–धीर ईसाई धर्म ने यूरोप में मित्री धर्म की जगह ले ली। कब, क्यों और कैसे यह संभव हुआ, इसकी एक दर्दनाक कहानी है। इंगलिस्तान में पुरातत्व विभाग ने अनेक मित्री मंदिरों को उल्लखनन करके मित्र की मूर्ति के साथ मजबूत जंजीरों में जकड़े हुये दस–दस, पन्द्रह–पन्द्रह मित्री उपासकों के नरकंकाल खोज निकाले हैं, जिन्हें धर्मान्ध लोगों ने मित्र की मूर्ति के साथ जिंदा दफन कर दिया था। इतिहास के धर्माध प्रकरण की ऐसी कोई दूसरी मिसाल नहीं है। (भारत और मानव संस्कृति खण्ड – 2 लेखक बिशम्भरनाथ पाण्डे, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली पृष्ठ 33)

इसी प्रकार राष्ट्रीय पुरातत्व संस्थान के सामुद्रिक पुरातत्व विभाग द्वारा, समुद्र के गर्भ में खोजे प्राचीन द्वारिका के अवशेषों में प्राप्त 30 फीट चौड़ी प्राचीन शहर कोट, कृष्ण कालीन द्वारिका के पुरातन भवनों और उस काल की वहाँ विद्यमान धातु –सामग्रियों के रेडीयो कार्बन व थर्मोल्युमिनिसेंट तिथि क्रम निर्धारण में भी वे 5000 वर्ष प्राचीन तक सिद्ध हो रहे है। इससे, आधुनिक इतिहासकारों द्वारा निर्धारित महाभारत काल के स्थान पर, पौराणिक गणनाओं में दिये काल को विशेष बल मिलता है। आज आवश्यकता है कि प्राचीन द्वारिका के समुद्र के अन्दर विद्यमान अवशेषों के सरंक्षण की, जिससे वे विनष्ट न होवें। उस समुद्र के जल में डूबी द्वारिका में 7000 वर्ष प्राचीन बन्दरगाह के अवशेष भी मिले हैं, जिनमें, बड़ी मात्रा में जहाजों के पत्थर के लंगर हैं। पास में खम्भात में तो 9–12 हजार प्राचीन बन्दरगाह तक मिला है। ऋग्वेद में शतरित्र अर्थात सौ अरित्र या चप्पुओं वाले जलयान से दूर देश से समुद्र पार व्यापार के विवरणों की पुष्टि होती है। हमारे प्राचीन ग्रन्थ विष्णु पुराण में भी श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण के बाद द्वारिका का जल में डूबने का वर्णन है। उसकी पुष्टि द्वारिका के समुद्र के अन्दर मिले ये अवशेष कर रहे हैं। रामायण काल भी पौराणिक गणनाओं के अनुसार त्रेता युग, जो 8.69 लाख वर्ष पूर्व समाप्त हुआ, में माना जाता है। आधुनिक इतिहासकार उसे 3500 से 7000 वर्ष प्राचीन ही बताते है। वाल्मिकी रामायण में चार दांत वाले हाथियों का वर्णन आया है। आधुनिक पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार चार दांत वाले हाथी, पृथ्वी पर 10 लाख वर्ष पूर्व विलोपित हो गए थे जो 2.5 करोड़ वर्ष पहले से होते आये है। इसीलिये महाभारत अथवा परवर्ती काल के ग्रथों में, जब चार दांत वाले हाथो विलोपित हो गये, इनके वर्णन नहीं मिलते है।

हाल के सभी नवीन अन्वेषणों का वर्तमान के लिखित इतिहास का आज गंभीरता पूर्वक पुनविवेचन भी आवश्यक हो जाता है। विगत 40–50 वर्षों में देश भर में अनेक स्थानों पर हुये पुरातात्विक अन्वेषणों में

अनगिनत नये तथ्य व प्रमाण प्रकट हुये हैं। उदाहरणतः विगत 12 वर्षों में भारतीय व फ्रेंच पुरातत्वविदों द्वारा चैन्नई के पास अत्तिरम्पक्कम खोजे 15 लाख वर्ष पुराने 3528 औजारों के बाद यह पुराना मिथक गलत सिद्ध हो जाता है कि 80,000 वर्ष पूर्व प्राचीन मानव ने अफ्रिका से भारत में प्रवेश किया। इसी क्रम मे हाल ही में 2011 में महाराष्ट्र के चन्द्रपुर जिले के पिस्दुरा गाँव में डायनासोर के उत्सर्जनों में जो 3.5 करोड़ प्राचीन चाँवल के जीवाष्म मिलने से यह मिथक टूट जाता है कि चाँवल भारत में चीन से आया है। चाँवल की फिंगरप्रिण्टिंग हेतु जो नया डी.एन. चिप विकसित किया है और जिससे प्राकृतिक व उगाये हुये चाँवल के जर्म प्लाज्म में अन्तर का अध्ययन सम्भव हुआ है ईसा पूर्व 6500 वर्ष पूर्व भारत में डॉमेस्टिकेटेड चाँवल की खेती के प्रमाण भी सामने आये हैं। उत्तर प्रदेश में लहरदेवा पुरातात्विक अध्ययनों में पाये डोमेस्टिकेटेड चाँवल ईसा पूर्व 2000 वर्ष पहले ही चीन से भारत आया। इन पुरातात्विक खोजों के अतिरिक्त अयोध्या के प्राचीन राम जन्मभूमि मन्दिर की लेजर स्केनिंग से लेकर राम सेतु पर ''जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया'' द्वारा की गयो ड्रिलिंग (बोर लॉगिंग) के परिणाम भी इस सम्बन्ध में विशेष महत्व के हैं। इनका समावश भी इतिहास की पुस्तकों में अपेक्षित है। सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि, तमिल ब्राह्मी लिपि व दक्षिण अमेरिका प्राचीन लिपियों में साम्य के जो प्रारम्भिक अनुसन्धान हुये हैं, वे भी विश्व के प्राचीन इतिहास पर नवीन प्रकाश डालने वाले सिद्ध होंगे। प्राचीन द्वारिका के चारों और जल में कोई अवरोध खड़े कर उसको संरक्षित किये जाने हेतु भी कोई स्वतंत्र स्वायत्त मिशन सामुद्रिक पुरातत्व विभाग के अन्तर्गत सोचा जाना चाहिये।

इसलिये विगत 50–60 वर्षों में उपग्रह के चित्रों, लेजर स्केन चित्रों, पुरातात्विक उत्खननों एवं अन्य आधुनिक तकनीकों से जो नये–नये तथ्य व प्रमाण प्रकट हुए हैं। इस प्रकार के सभी समसामयिक अन्वेषणों के क्रम बद्ध संकलन हेतु एक राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वायत्त मिशन अथवा संस्थान की आवश्यकता है।

View publication stats